३. नाखून क्यों बढ़ते हैं ?

– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

परिचय

जन्म : १९०७, बलिया (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७९ (उ.प्र.)
परिचय : द्विवेदी जी हिंदी साहित्य के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार हैं । आपका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और आपका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था । आप हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्‌वान थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अशोक के फूल', 'कल्पलता' (निबंध), 'बाणभट्ट की आत्मकथा,' 'पुनर्नवा' (उपन्यास) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत वैचारिक निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद ने नाखून बढ़ने को पशुता का चिह्न माना है । नाखून पशुता, बुराइयों का प्रतीक है । आपका कहना है कि जिस तरह नाखून बढ़ने पर हम उसे काट देते हैं, ठीक उसी तरह यदि किसी में बुरी आदतें आ जाएँ तो उन्हें त्याग देना चाहिए ।

मौलिक सृजन

सद्‌गुणों और दुर्गुणों में अंतर लिखो ।

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं । अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है । मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ लिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका । हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं । काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकर कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति छूटते ही फिर जैसे के तैसे हो जाते हैं । आखिर ये इतने बेहया क्यों हैं ?

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा । उसे नाखून की जरूरत थी । उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे । असल में वही उसके अस्त्र थे । दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था । धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा । उसने हड्‌डियों के भी हथियार बनाए । मनुष्य धीरे-धीरे और आगे बढ़ा । उसने धातु के हथियार बनाए । इतिहास आगे बढ़ा । कभी-कभी मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने पर डाँटता है । वे रोज बढ़ते हैं । मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता । ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं । मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती ।

अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले । मनुष्य की नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है । उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है ।

मेरा मन पूछता है– मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है ? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर ? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर ? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य जाति से ही प्रश्न किया है– जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं ? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं । मैं भी पूछता हूँ-जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं ? ये हमारी पशुता की निशानी हैं । स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में

सुखी कैसे बनाया जाए । हमारी परंपरा महिमामयी और संस्कार उज्ज्वल हैं क्योंकि अपने आप पर, अपने आप द्‌वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है ।

मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है ! उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुख के प्रति समवेदना है, श्रद्‌धा है, तप है, त्याग है । इसीलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है । वचन, मन एवं शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत मानता है ।

ऐसा कोई दिन आ सकता है जब मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मरणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है ।

मनुष्य में जो घृणा है जो अनायास बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व का द्‌योतक है । अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है । नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है । उसको काट देना उस स्वनिर्धारित आत्मबंधन का फल है जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है ।

नाखून बढ़ते हैं तो बढ़ें, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा ।

—— ० ——

श्रवणीय

मानवीय मूल्य वाले शब्दों का चार्ट बनाओ । इन शब्दों में से किसी एक शब्द से संबंधित कोई प्रसंग/घटना सुनो और सुनाओ ।

संभाषणीय

विविध संवेदनशील मुद्‌दों/विषयों (जैसे-जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाज) के बारे में अपने शिक्षक से प्रश्न पूछो ।

लेखनीय

'सुरक्षा हेतु शस्त्रों की भरमार' विषय के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार लिखो ।

पठनीय

पाठ्‌यसामग्री और अन्य पठन सामग्री का द्रुत वाचन करके उनमें आए विचारों पर सहपाठियों से चर्चा करो ।

शब्द वाटिका

वनमानुष = बंदर की एक प्रजाति
पाशवी = पशुवत
निर्बोध = अज्ञान
आचरण = बर्ताव, व्यवहार
लुप्त = गायब
घृणा = नफरत
द्योतक = प्रतीक
चरितार्थता = सार्थकता

✻ सूचनानुसार कृतियाँ करो :-

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

मनुष्य में पशुत्व से भिन्नता दर्शाने वाली बातें
↓ ______
↓ ______
↓ ______
↓ ______

(२) प्रतीक लिखो :

नाखूनों को बढ़ाना	नाखूनों को काटना
______	______
______	______
______	______
______	______

(३) उत्तर लिखो :

१. मनुष्य की चरितार्थता इन दो बातों में है :-
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------
२. मनुष्य का स्वधर्म यह है :
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------
३. मनुष्य को नाखूनों की जरूरत तब थी :
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------

भाषा बिंदु

(१) निम्न शब्दों के लिंग पहचानकर लिखो –
आत्मा, व्यक्ति, बादल, तार, नोट, नाखून, पुस्तक, तकिया, दही
(२) अर्थ के अनुसार वाक्यों के प्रकार ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन

किसी मौलिक मराठी विज्ञापन का हिंदी में अनुवाद करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित मुहावरों की अर्थ सहित सूची बनाओ ।

IPEILP